परिशिष्ट 14 **(संगति)**

कलीसिया अर्थात मसीह की देह अटूट है।

क्या एक मसीही व्यक्ति के लिए यह सम्भव है कि वह बिना कलीसिया के विश्वासी के रूप में बढ़ सके व सेवा कर सके?

1. धरती पर लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली दो ताकते हैं।

पढ़ें रोमियों 5:17-19; 1 कुरिन्थियों 15:21-22,45।

(1) धरती पर लोगों को प्रतिनिधित्व करने वाली दो शक्तियां।

आदम उस देह का सिर अर्थात प्रधान है जो सारे खोये या भटके हुए लोगों (मानवजाति)को दर्शाती है। मसीह उस देह का सिर अर्थात प्रधान है जो उद्धार पाय हुए लोगों को दर्शाती है। आदम संसार में पायी जाने वाली सम्पूर्ण मानवजाति का सिर है। मसीह संसार भर में पायी जाने वाली सार्वभौमिक कलीसिया व सभी स्थानीय कलीसियाओं का सिर है। सारे जगत के विश्वासियों के समाज को बाइबल में(इफिसियों 1:22) "मसीह को देह" या प्रेरितों की भाषा में "एक सार्वभौमिक कलीसिया " कहा जाता है।

- पहला आदम (प्रथम मनुष्य) पुरानी मानवता को प्रधान प्रतीक है, जिसमें इसके के सभी कालों में पाये जाने वाले पापी लोग शामिल हैं।
- दूसरा आदम (यीशु मसीह) नयी मानवता का प्रधान ठहरा, जिसमें पुराने नियम में अपेक्षित मसीह पर विश्वास करने वाले लोग व नय नियम के इतिहास में यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले सारे जगत के विश्वासी लोग शामिल थे। जिस एकमात्र कारण से यीशु मसीह इस दुनिया में आये, वह कारण मानव जाति के रिश्ते को परमेश्वर पिता से बहाल करना था।

(2) देह अपने सिर के जीवन का हिस्सा होती है।

- जितने लोग प्रथम आदम से जुड़े हुए हैं(अर्थात सम्पूर्ण मानव जाति) वह पहले आदम के पापों की भागीदार है। जितने लोग मानवीय उत्पत्ति के कारण प्रथम आदम से जुड़े हुए हैं वे उसके साथ पाप(अय्यूब 14:4; भजन 51:5), मृत्यु(रोमियों 5:12,17) और दण्ड (रोमियों 5:18) के भागीदार हैं।
- जितने लोग दूसरे आदम (यीशु मसीह) से जुड़े हैं,वे उस धार्मिकता के भागीदार हैं जिसे यीशु मसीह ने कमाया है। जितने भी लोग यीशु मसीह से जुड़े हुए हैं वे परमेश्वर के क्रोध से बच गये तथा उनका परमेश्वर के साथ में मेल मिलाप हो गया है(रोमियों 5:9-10)। जितने लोग आत्मिक नये जन्म के द्वारा यीशु मसीह अर्थात दूसरे आदम से जुड़े हुए हैं वे उसके नये जीवन व उसकी धार्मिकता के भागीदार हैं (रोमियों 5:14-19;1 कुरिन्थियों 15:22)

2. धरती पर केवल दो समुदाय पाये जाते हैं।

संसार में केवल दो प्रकार के लोग पाये जाते हैं। धरती के सारे लोग दोनों में से किसी एक श्रेणी में जाते हैं।

(1) अविश्वासियो का समाज जिसे हम संसार के नाम से जानते हैं।

"दुष्ट संसार" (1यूहन्ना 2:15-17) या "अन्धकार की शक्तियां" (कुलुस्सियों 1:13)।

(2) यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों का समाज जिन्हें हम कलीसिया के नाम से जानते हैं।

"सार्वभौमिक कलीसिया"(मत्ती 16:18) या "मसीह की देह" (इफिसियों 5:23) या " परमेश्वर का राज्य"(मरकुस 10:25-26)। मसीहियों को समाज संसार में रहता तो है, परन्तु वह संसार में का नहीं है(यूहन्ना 17:14-16)। और संसार में रहते हुए, विश्वासियों का यह समाज अन्धकार में ज्योति और शुद्ध करने,सुरक्षित रखने और स्वाद देने वाले नमक का काम करता है। (मत्ती 5:14-16)।

3. मसीह की देह में होकर उद्धार के निश्चय का अनुभव किया जा सकता है।

(1) उद्धार केवल यीशु मसीह के द्वारा ही सम्भव है।

यीशु ने कहा, "मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुँच सकता(यूहन्ना 14: 6)। " किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं है;क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम

उद्धार पा सकें।"(प्रेरितों 4:12)। "जो कोई मसीह में है वह एक नई सृष्टि है,पुरानी बातें बीत गयीं, देखो सब कुछ नया हो गया है"(2कुरिन्थियों 5:17)! "जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है। लेकिन जिसके पास पुत्र नहीं उसके पास जीवन भी नहीं है।"(1यूहन्ना 5:11-13)।

(2) उद्धार का निश्चय का अनुभव केवल यीशु की देह में ही किया जाता है।

- उद्धार के निश्चय का अनुभव मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध के द्वारा ही अनुभव किया जाता है। "यीशु में होने के" आत्मिक व व्यवहारिक मायने होते हैं।

  -आत्मिक तौर पर इसका मतलब धार्मिकता और पवित्रता को अपनाना होता है(1 कुरिन्थियों 1:30), जिसे यीशु मसीह की ओर से विश्वासियों के लिए दिया गया है। पवित्र आत्मा लगातार विश्वासियों के व्यक्तिगत जीवन में धार्मिकता और पवित्रता प्रदान करता है(रोमियों 8:5-17; 2 कुरिन्थियों 3:17-18)।

  -व्यवहारिक तौर पर इसका मतलब मसीह की देह में होना अर्थात सार्वभौमिक विश्वासियों के समाज कलीसिया में एक दूसरे के साथ जुड़ा होना होता है। प्रत्येक विश्वासी के जीवन में (1कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20) तथा मसीह की देह में(इफिसियों 2:19-22) पाया जाने वाला पवित्र आत्मा, दोनों ही जगहों में स्वयं "यीशु मसीह की उपस्थिति को" प्रगट करता है।

- उद्धार का निश्चय मसीह की देह के कार्यों में अनुभव किया जाता है। जब एक व्यक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा बपतिस्मा पाता है, तो वह एक ही क्षण में एक सदस्य के रूप में व्यक्तिगत तौर पर (तीतुस 3:5-6) और मसीह की देह में (सार्वभौमिक मसीही कलीसिया में) (1 कुरिन्थियों 12:12-13) एक अंग के रूप में नया जन्म हो जाता है। पवित्र आत्मा स्वयं उसकी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देता है कि वह परमेश्वर की एक सन्तान है(रोमियो 8:16)। विश्वासी लोग केवल यीशु और विश्वासियों के बीच में व्यक्तिगत सम्बन्धों में ही उद्धार के निश्चय को महसूस नहीं करते, वरन इसे मसीह की देह(सार्वभौमिक कलीसिया में भी) महसूस किया जा सकता है।

  "जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है वह ज्योति में रहता है और ठोकर नहीं खा सकता"(1यूहन्ना 2:9-10)। विश्वासी के किसी दूसरे मसीही के साथ रिश्ते को उसके मसीह के साथ रिश्ते से अलग करना अनहोना है। यीशु मसीह अर्थात देह के सिर को उसकी देह से अलग करना अनहोना है। इस कारण बिना कलीसिया में कोई भूमिका निभाये या कुछ काम किये अपने उद्धार के निश्चय का अनुभव करना मुमकिन नहीं है। मसीह की देह में अनेकों मण्डलियां, घरेलू कलीसियाएं और एक दूसरे के साथ विश्वासियों के आपसी सम्बन्ध आते हैं।

अत: कलीसिया विश्वासियों के लिए एक सुन्दर व सिद्ध उपहार है, जहां पर वे केवल यह जी महसूस नहीं करते कि वे यीशु मसीह में सुरक्षित हैं, परन्तु वे यह भी महसूस करते हैं कि वे मसीह द्वारा कमाई गयी व प्रदान की गयो धार्मिकता(उद्धार) व पवित्रता के भी भागीदार हैं।

4. यीशु मसीह से जुड़ने का अर्थ है मसीह की देह से जुड़ना।

बाइबल में 'नया मनुष्य' भाव को अनेकों बार इस्तेमाल किया गया है।

(1)"नया मनुष्य" मसीह, मसीहियों या मसीही कलीसिया को दर्शाता है।

सन्दर्भ से उसके सही अर्थ का पता चलता है।

- नया मनुष्य मसीह को दर्शाता है(1 कुरिन्थियों 15:47)। आदम "पहला मनुष्य है जिसे इस धरती की मिटटी से बनाया गया" और यीशु मसीही "दूसरा मनुष्य है जो स्वर्ग से उतरा"। अत: दूसरा या नया मनुष्य यीशु मसीह है।
- नया मनुष्य मसीही को दर्शाता है(रोमियो 6:2-7; इफिसियों 4:20-24)। "पुराना मनुष्य" किसी अविश्वासी के पापमय स्वभाव को दर्शाता है। स्वाभाविक मनुष्य ने स्वंय ही पापमय स्वभाव का दास होने को चुनाव किया(रोमियों 6:16) और उसके पश्चात पाप मय स्वभाव उसके जीवन पर राज्य करने लगा(रोमियों 8:6-8)। "नया मनुष्य" विश्वासी के नये स्वभाव को व्यक्त करता है। विश्वास के द्वारा मनुष्य के अन्दर से पापमय स्वभाव को हमेशा के लिए दूर करके उसमें सदा के लिए नया स्वभाव डाल दिया गया है(इफिसियों 4:22,24)! पुराना मनुष्यत्व व नया मनुष्यत्व कभी भी एक साथ नहीं रह सकते।
- नया मनुष्य मसीही कलीसिया,अर्थात मसीह की देह को दर्शाता है (इफिसियों 2:15-16)। यीशु मसीह ने दो प्राचीन समुदायों अर्थात यहूदियों व अन्यजातियों में से विश्वासियों को लिया, जिनकी उत्पत्ति आदम ही से हुई, लेकिन उन्हें "नये

मनुष्य" द्वारा नया बनाया गया। अत: वह एक मसीही कलीसिया अर्थात एक मसीह की देह का र्निमाण करता है जिसमें सारे जगत से विश्वासी शामिल होते हैं। इस एक मसीह की देह में, मसीह यहूदी और अन्यजातियों में से आये विश्वासियों को परमेश्वर व अन्य विश्वासियों से जोड़ता है। "नया मनुष्य" विश्वासियों को वह समुदाय है जो मसीह के द्वारा शुद्ध और धर्मी ठहराया गया है(इफिसियों 2:15-16; यूहन्ना 10:16)। नया मनुष्य मसीह की देह है, जिसके अन्तर्गत पवित्र आत्मा ने सारे विश्वासियों को बपतिस्मा दिया है(1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

नये मनुष्य के दायरे से बाहर(मसीह की देह,सार्वभौमिक कलीसिया), केवल एक पुराना मनुष्य विद्यमान है (संसार,अर्थात विभाजन, स्वार्थ और लड़ाईयों के भरा पुराना मनुष्यत्व)। यदि कोई विश्वासी जन मसीही की देह का भाग नहीं है तो वह कभी मसीह की देह का भी कोई हिस्सा नहीं हो सकता है।

यहां पर (इफिसियो 4522.24 में) पहनने या उतारने का अर्थ धीमी गति से होने वाली बढ़ौतरी से नहीं, वरन उस निश्चित समय से है जब आप अपना रिश्ता पापमय संसार से तोड़कर, एक पवित्र समाज से अपना रिश्ता बना लेते है। इस मलतब है कि हमें हमेशा के लिए अन्धकार के राज्य से निकालकर मसीह के राज्य में प्रवेश करवाया गया है(कुलुस्सियों 1:13)। (ध्यान दें इफिसियों 4:1-16 मसीह की देह में जीवन को प्रगट करता है,कुलुस्सियों 3:9-11 यहूदी और अन्यजाति से मिलकर बने समाज के बारे में बात करता है और कुलुस्सियों 3:14 मसीही की देह के बारे में बताता है)

(2) नया मनुष्य बनने का अर्थ यीशु मसीह और मसीही कलीसिया से अखण्डता है।

परमेश्वर की समपूर्ण ईश्वरीयता शारीरिक रूप में मसीह में वास करती है(कुलुस्सियों 2:9)। इसी प्रकार से यीशु मसीह की परिपूर्णता मसीह की देह अर्थात कलीसिया में वास करती है(इफिसियों 2:22-23)! जब विश्वासी जन व्यक्तिगत तौर पर यीशु से (देह के सिर से, व मसीही कलीसिया से (मसीह की देह) से जुड़े होते हैं, तो वे परमेश्वर की परिपूर्णता से भरते हैं(इफिसियों 3:19; 1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 3:18; फिलिप्पियों 37-21; 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1-3)।

निष्कर्ष। नया मनुष्य मसीह व मसीह की देह दोनों हैं। हम मसीह की देह को मसीह से अलग नहीं कर सकते। ऐसा सम्भव नहीं है कि हम मसीह को स्वर्ग में देखें और उसकी देह केवल मानवीय रूप में धरती पर विद्यमान बनी रहे। हमें कलीसिया को लोगों की संस्था के रूप में नहीं वरन एक जीव के रूप में देखना होगा जिसकी अपनी एक देह है, अर्थात मसीह की देह, जो अटूट तरीके से अपने सिर अर्थात मसीह के साथ जुड़ी हुई है। हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि हम एक स्वर्ग में यीशु मसीह के साथ अपना रिश्ता मज़बूत कर लें और उसके साथ साथ कलीसिया से कोई सम्बन्ध बनाकर रखने से परहेज़ करें। मसीह में बढ़ने का अर्थ मसीह की देह में होना भी है।

(5) मसीह की देह में जुड़ने का अर्थ यह भी है हम अपनी समझ से या अपने लिए जीवन व्यतीत नहीं करते हैं।

(1) देह के अंगों को देह से अलग नहीं किया जा सकता।

"क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं। वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।" जब लोग यीशु मसीह में विश्वासी बन जाते हैं, तो वे पवित्र आत्मा द्वारा एक मसीह के देह के रूप में बपतिस्मा लेते हैं(1कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: लोग आज या कलीसिया से बाहर संसार में हैं या मसीह की देह के भाग हैं! लोग या तो आज अन्धकार के अधिकार में हैं या मसीह के राज्य में(कुलुस्सियों 1:13)। लोग या तो आज भी भटके हुए पुत्र या पुत्री हैं या फिर वे परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। वे या तो आज भी मरे हुए हैं या सच में जीवित हैं। वे या तो आज भी भटके हुए हैं या उन्हें उनकी सही जगह मिल गयी है (लूका 15:11-24)। मसीह की देह बहुत सी स्थानीय कलीसियाओं, घरेलू कलीसियाओं और मसीहियों के आपसी सम्बन्ध से मिलकर बनी होती है।

(2) देह के अंग देह से बाहर होकर अलग कार्य नहीं कर सकते।

कोई भी अंग अपनी हद से बढ़कर काम नहीं कर सकता। कोई भी मसीह जो देह में हाथ का काम कर रहा हो दूसरे विश्वासी के स्थान पर काम नहीं कर सकता जो देह में आँख की भूमिका निभा रहा है। मानवीय देह में हाथ और आंख का उस देह के जीवित रहते हुए अपना विशेष स्थान व कार्य है। इसी प्रकार से हर विश्वासी जो हाथ या आँख के रूप में देह में कार्य करता है तब तक ही सच्चा विश्वासी है जब तक वह देह के साथ जुड़ा हुआ है। मसीह की देह के बाहर, विश्वासी लोग न जी सकते हैं और न ही सक्रिय रूप में हाथ या आँख की तरह से काम कर सकते हैं। आप कल्पना करके देखिये कि हाथ या कान बिना देह से जुड़े हुए अगर काम करने की कोशिश करते हैं तो क्या होगा!

कोई भी विश्वासी यदि मसीह की देह अर्थात कलीसिया से अलग हो जाता है जो वह मसीही जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। मसीही जीवन का अर्थ होता है कि अब वह विश्वासी अपने हिसाब से या अपने लिए जीवन व्यतीत नहीं करता, अब मसीह उसमें और उसके द्वारा अपना जीवन व्यतीत करता है(गलातियों 2:20; रोमियो 8:10; 2 कुरिन्थियों 13:5)। मसीह केवल तब ही किसी विश्वासी के जीवन में या उनके द्वारा कार्य कर सकता है जब वह देह के साथ अर्थात संसार भर में सार्वभौमिक कलीसिया के साथ जुड़े हों।
